फरीदाबाद
मजदूर समाचार
हर जगह, सब से, जब भी समय मिले

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **319** 1/- *जनवरी* **2015**

नटखट गिलहरी ने जंगल उगाया

''जब होता है, तो यह होता है'' पिछले अंक के 'सात अरब में गोधूलि वेला का आगमन' को पढ कर, सोचते हुये एक महिला मजदूर बोली। आगे बोली, '' ये निष्कर्ष नहीं है किसी अनुभव का। बल्कि, ये एक करंट है जो जीवन को गति देता है।''

कैसे ?

'' अनुभवों की चोहद्दी को हर समय सब इन्सान तोड़ते हैं। उस में दरारें पड़ती हैं। उसे पार किया जाता है। ये इतना तेजी से होता है, इतने रूपों में होता है कि, पार करने वाले तक उसके पहलुओं को स्मृति में नहीं रख पाते। हर तरफ रिसाव होता है, चौतरफा दरारें पड़ती हैं — शब्द कम पड़ते हैं। धरातल उपजाऊ है, नये शब्द उगा देगा।''

क्या ये सब दिखता है ?

''आसपास गौर से देखिये। एक जीवंत करंट है, जो हर एक से प्रस्फुटित हो रहा है। एक थिरकन है ; प्रत्येक में दमक आती-जाती रहती है। ये करंट, ये थिरकन, ये आती-जाती दमक खलल पैदा करते हैं।

''अनुभव के दायरे कभी-कभी जकड़ लेते हैं। कुछ आदतें इन्हें कवच दे देती हैं। दूसरों से उभरते करंट इन दायरों और आदतों को अस्थिरता में लाते रहते हैं। मेरे मन में हर वक्त ये सवाल उठता है कि फिल्मों में कौन होता जो सब के लिये गाना गा पाता है ? किन में ये क्षमता होती है कि वे सब के लिये गा सकें ? जो सात अरब के लिये गा सकें ?''

ये ''दूसरे'' कौन हैं जिन से ये करंट उभरते हैं ?

'' 'दूसरे' कोई भी हो सकते हैं। 'दूसरा' कुछ भी हो सकता है। पाँच सौ साल से चला आ रहा दोहा भी हो सकता है ; प्राचीन पहेली भी हो सकती है ; फुलझड़ी भी हो सकती है ; टूटता तारा भी हो सकता है ; गत्ते थामे, बातचीत में लीन, किसी फैक्ट्री के लोग हो सकते हैं ; एक खत हो सकता है ; एक पशु हो सकता है ; पक्षियों का झुण्ड हो सकता है ; समन्वय की लहर हो सकती है ; वायुयान द्वारा आसमान में छोड़ी धुँयें की लकीर, महासागर में उफनती लहरें, क्षितिज में लटका सूरज हो सकते हैं। उदार मन का एक आवेग हो सकता है ; मानसून के आगमन की गर्जन हो सकती है।

''दिन-रात, रात-दिन अनंत, अनगिनत करंट हम से होते हुये, बल देते और बल लेते हुये विद्यमान रहते हैं।

''गिलहरी को ही ले लो। दिन-रात, रात-दिन अनंत, अनगिनत गुठलियाँ यहाँ-वहाँ गाड़ देती है। कुछ को खा लेती है, कुछ छूट जाती हैं, कुछ को भूल जाती है'', वो हँसी। ''जंगल उग आता है।

''आप और मैं गिलहरी भी हैं, गुठली भी हैं, जंगल भी हैं।'' ■

✶ ***राष्ट्रीय सहारा प्रेस मजदूर :*** '' प्लॉट सी-2, 3, 4 सैक्टर-11, नोएडा स्थित प्रेस में 2008 तक अखबार की सवा लाख प्रतियाँ प्रतिदिन छपती थी, घटते-घटते नवम्बर 2014 में चार हजार प्रतियाँ हो गई — अखबार बिकता ही नहीं। यहाँ सहारा परिवार की पत्रिका, सहारा बैंक के पासबुक व फार्म छपने के साथ-साथ बाहर का छपाई का काम भी होता है। सहारा प्रमुख सुब्रत राय 4 मार्च 2014 से जेल में और इधर तनखायें देने में देरी आरम्भ — अक्टूबर का वेतन 15 नवम्बर तक नहीं दिया था। मशीन विभाग में छपाई वाले 290 ऑपरेटर, कम्प्युटरों पर 250 वरकर, सम्पादकीय विभाग में 3-400 लोग, स्टोर, मार्केटिंग, डिस्पैच, गार्ड, ड्राइवर, सहारा समय टी वी के 250 वरकर — कुल मिला कर 4-5000 लोग और सब कम्पनी के रोल पर, सब स्थाई हैं। कम्पनी बन्द होने की कगार पर है। कैन्टीन ठेकेदार को कम्पनी ने 4 मार्च से भुगतान नहीं किया है, नवम्बर-मध्य तक 17-18 लाख रुपये बकाया। कर्मचारियों की भविष्य निधि राशि कम्पनी अपने द्वारा बनाये ट्रस्ट में रखती थी। वरकरों के 51 करोड़ रुपये ट्रस्ट में होने चाहियें पर उसमें पैसे नहीं हैं, पी.एफ. ट्रस्ट का पैसा कम्पनी ने कारोबार में लगा दिया। कर्मचारियों द्वारा दबाव डालने पर भविष्य निधि संगठन ने कम्पनी से पी.एफ. के पैसे उसके पास जमा करवाने को कहा तो सहारा कम्पनी ने कहा कि पैसे नहीं हैं! वरकरों के पी.एफ. के 51 करोड़ रुपये गायब! हम ने काफी प्रयास किये हैं पर राष्ट्रीय सहारा प्रेस वरकरों की बातें कोई भी अखबार नहीं छापता।''

✶ ***विक्टोरा टूल्स श्रमिक :*** ''प्लॉट 118 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 15 स्थाई मजदूर, 20 कैजुअल वरकर, और पाँच ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा*** दुपहियों और ***मारुति सुजुकी*** व ***महिन्द्रा*** वाहनों के लोहे के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को भी काम, दिन में 8 घण्टे और रात में 12 घण्टे। शिफ्ट 15-20 दिन में बदलते हैं तब एक शिफ्ट वालों की लगातार 24 घण्टे ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। महिला मजदूर 30-40 हैं, 10 घण्टे दिन की ड्युटी, हैल्पर वाला न्यूनतम वेतन भी नहीं, मात्र 4-5000 रुपये देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं। रिजेक्शन काफी होता है, गालियों की भरमार।''

✶ ***एन एस के कामगार :*** ''प्लॉट 214 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित बाइंग हाउस में प्रोडक्शन भी चालु है और यहाँ 250 लोग काम करते हैं। तनखा से पी.एफ. के पैसे काटते हैं। पे-स्लिप नहीं देते, पी.एफ. नम्बर हाथ से लिख कर देते हैं। इन्टरनेट पर देखते हैं तो ऑनलाइन हमारे पी.एफ. खातों में कोई राशि नहीं दिखाते। कम्पनी पी.एफ. के पैसे जमा नहीं करती, तीन वर्ष से काम कर रहों का भी फण्ड जमा नहीं किया है। मैनेजमेन्ट कहती है कि जमा हो जायेगा। भविष्य निधि कार्यालय में पी.एफ. जमा नहीं किये जाने की शिकायतें वरकर कई बार कर चुके हैं।''

✶ ***मंत्रा डॉट कॉम वरकर :*** '' दिल्ली-जयपुर मार्ग पर बिनौला गाँव, गुड़गाँव स्थित वेयरहाउस ई-मार्केटिंग का एक केन्द्र है। ऑनलाइन के करीब 4000 लोग एस के, ओम, राइजिंग आदि छह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। कम्प्युटर ऑपरेटर कह कर भर्ती करते हैं और फिर प्रवेश करते ही सब कामों में लगा देते हैं — पिकिंग, री-पिकिंग, बारकोड स्कैनिंग, रिजैक्ट को हटाना, क्रेट ढँग से लगाना, पैकिंग करना। भर्ती पर तनखा 20 हजार बताते हैं तो देते 12 हजार हैं। दो शिफ्ट, 9-9 घण्टे की बताते हैं और आर्डर ज्यादा होने पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर लॉजिस्टिक्स और क्वालिटी कन्ट्रोल वालों को तीन महीने किये ओवर टाइम के पैसे दिसम्बर-अन्त में तब दिये जब उन्होंने हल्ला मचाया — नये भर्ती क्यू सी भी यह कह कर साथ हो लिये कि हमारे साथ भी ऐसा होगा। भोजन कम्पनी सामान्य तौर पर देती है, सब को एक जैसा खाना और ज्यादा आर्डर के समय कम्पनी सुबह 8 बजे नाश्ता तथा दो बार चाय के साथ बिस्कुट देती है। कम्पनी ने स्वयं एक-दो स्टाफ वाले रखे हैं और वे भाषण देते हैं : कम्पनी ने तुम्हारे लिये बाराती वाला इन्तजाम किया है। ज्यादा आर्डर के समय साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं — बीमार होने पर भी छुट्टी नहीं, किसी प्रियजन की मृत्यु पर भी छुट्टी नहीं। जबरन ओवर टाइम। वरकर नौकरी छोड़ते रहते हैं। ठेकेदारों के दो-चार दिन किये काम के पैसे बचते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटे पैसे बचते हैं। ठेकेदारों के लोग गेट पर बैठे रहते हैं, काम ढूँढते वरकर आते हैं और ये लोग पकड़ लेते हैं।''

✶ ***बोहरा रबड़ मजदूर :*** '' मथुरा रोड़ पर झाड़सेंतली मोड़, सैक्टर-59, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 450 मजदूर काम करते हैं। वरकरों की प्रोडक्शन में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और इन्सपैक्शन आदि में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्टाफ की 10 घण्टे की शिफ्ट हैं। स्टाफ में भी आधे लोगों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं — नये लोग तनखा से पैसे नहीं कटवाते। फैक्ट्री में गन्दगी बहुत है — मिक्सिंग में कार्बन का बहुत धुँआ होता है, मजदूर बीमार पड़ते रहते हैं। तनखा देरी से, 12-14 तारीख को।''

✶ ***नियोलाइट श्रमिक :*** ''प्लॉट 396 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर रोज सुबह 9 से रात 8 बजे की शिफ्ट में वाहनों की लाइटें बनाते हैं। दो मिनट देरी से पहुँचने पर मैनेजमेन्ट एक घण्टे के पैसे काट लेती है। माह-अन्त के 5 दिन रात 8 बजे बाद भी जबरन रोकते हैं। वरकर नौकरी छोड़ते रहते हैं — छोड़ने पर दस-बारह दिन किये काम के पैसे नहीं देते। और, पी.एफ. के पैसे निकालने का फार्म भरने के लिये मजदूरों से ठेकेदार पैसे लेते हैं।''

✶ ***सेनलूब इन्डस्ट्रीज कामगार :*** ''प्लॉट 233-234 सैक्टर-58, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 15 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूर 1½ से 2000 लीटर ऑयल तथा ग्रीसिंग की मोटरयुक्त मशीनें बनाते हैं। डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट से यहाँ 2013 में ट्रान्सफर के समय काफी खींचातान के बाद आने-जाने के लिये 60 रुपये प्रतिदिन तय हुआ और फिर इसमें भी कम्पनी ने बाल की खाल निकाली। यहाँ फैक्ट्री दुमंजिला है और ऊपर की मंजिल शीशों से घिरी है, कोई एग्जास्ट फैन नहीं है, घुटन होती है, गर्मी में तो बहुत बुरा हाल।''

✶ ***एम पी एच नेटवर्क वरकर :*** ''प्लॉट 188 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर रोज सुबह 9½ से रात 9 बजे तक काम करते हैं। भर्ती के समय ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से बताते हैं पर देते सिंगल रेट से हैं। भर्ती के समय तनखा 6800-7000 कहते हैं पर देते 6000 रुपये ही हैं। और, इन 6000 में से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि जबरन काटते हैं।''

✶ ***रॉयल टूल्स मजदूर :*** '' प्लॉट 74-75 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 9 बजे की शिफ्ट में ***होण्डा*** दुपहियों और ***मारुति सुजुकी*** कारों के पार्ट्स बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चार सौ में अधिकतर मजदूर कैजुअल वरकर हैं, 20 प्रतिशत ठेकेदार के जरिये रखे हैं, बहुत कम स्थाई मजदूर हैं। हैल्परों को निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दिवाली पर बोनस सब को दिया, पर मात्र 3000-3100 रुपये ही।''

निमंत्रण

जनवरी में 25 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

धरने पर बातचीत

आई.एम.टी. मानेसर में प्लॉट 192 सैक्टर-4 सिथत ***मुंजाल किरियु*** के 195 स्थाई मजदूर 24 सितम्बर 2014 से फैक्ट्री के बाहर धरने पर बैठे हैं और फैक्ट्री में उत्पादन कार्य जारी है। सन् 2013 से इस फैक्ट्री में मजदूरों और मैनेजमेन्ट के बीच तीखी खींचातान चल रही है। सितम्बर 2014 में योजना बना कर, तैयारी कर, उकसा कर कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को फैक्ट्री के बाहर किया। विवरण मजदूर समाचार के अक्टूबर 2014 अंक में है।

मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों से धरना-स्थल पर अक्टूबर और नवम्बर में विस्तार से बातचीत हुई। इधर 4 जनवरी को तीसरी बार मुंजाल किरियु फैक्ट्री गेट पर तीन महीने दस दिन से धरने पर बैठे मजदूरों से काफी बातें हुई। कड़ाके की सर्दी में कामचलाऊ प्लास्टिक शीटों से ढके स्थान पर दिन-रात धरने पर बैठने से ज्यादा चकित करने वाली बात है: समय बीतने के साथ अपनी स्थिति के कमजोर होते जाने पर भी इन मजदूरों का अड़े रहना, आडू बने रहना।

इस बार की बातचीत में फैक्ट्री मजदूरों से घनिष्टता से जुड़े रहे अमरीका से आये एक मित्र भी थे। एक जगह टिके हुये, ठहरे हुये, जड़ धरने का बहुत-ही कम प्रभाव पड़ता है। यह मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों ने भी खूब भुगता है। ऐसे में चलने वाले, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने वाले, गतिशील धरने पर विचार करना बनता है। सुबह की शिफ्टें आरम्भ होने के समय अपनी बातें लिखे गत्ते थामे दस-बीस मजदूरों का एक-दूसरे से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर उन रास्तों पर खड़े होना जहाँ से बड़ी सँख्या में मजदूरों का आना-जाना होता है। यह गतिशील धरना है। ऐसी एक राह पर एक दिन, दूसरे रास्ते पर दूसरे दिन, तीसरे दिन तीसरी राह पर इन्डस्ट्रीयल एरिया में गत्ते ले कर खड़े होना चलता-फिरता धरना है। भोजन अवकाश के समय 15-20 मिनट के लिये गत्ते लिये मुंजाल किरियु मजदूरों का मुंजाल शोवा फैक्ट्री गेट पर जाना, होण्डा गेट जाना, ओरियन्ट क्राफ्ट गेट जाना गतिशील धरना है। तारीख के दिन मजदूरों का गत्ते ले कर श्रम विभाग कार्यालय पर खड़े होना चलता-फिरता धरना है। लघु सचिवालय पर, सरकारी अस्पताल पर, बस अड्डे पर, स्कूल-कॉलेज के पास, अदालत के पास गत्ते ले कर खड़े होना गतिशील धरना है। चलते-फिरते धरने के लिये फैक्ट्री गेट का धरना-स्थल सुस्ताने और चर्चा करने का अड्डा बन जाता है। चलता-फिरता, गतिशील धरना एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों का मामला बनाने, व्यापक समाज का मामला बनाने की क्षमता लिये है।

अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स

प्लॉट 399 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री से 1 नवम्बर 2014 को अचानक निकाले गये ठेकेदारों के जरिये रखे 310 मजदूरों ने फैक्ट्री गेट के पास धरना आरम्भ किया था। श्रम विभाग में शिकायत-तारीखें, प्रदर्शन, पर्चा, ज्ञापन, मीटिंगों में लीडरों के भाषणों से बात बनती नहीं देख, 25 नवम्बर को 2 पुरुष और 5 महिला मजदूरों ने अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल आरम्भ की थी। विवरण मजदूर समाचार के दिसम्बर 2014 अंक में है। भूख हड़ताल किये 16 दिन हो गये तब बिना किसी समझौते के मजदूरों ने भूख हड़ताल समाप्त कर दी। ऐसे में हाई कोर्ट की राह सुझाने वालों को क्या कहेंगे? मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के 147 मजदूर अगस्त 2012 से जेल में हैं और इस हाई कोर्ट ने उन्हें जमानत देने से मना कर दिया है। जनवरी 2015 के आरम्भ में भी मारुति सुजुकी मानेसर के 147 मजदूर जेल में हैं।

कागज नहीं आया है

उद्योग विहार गुड़गाँव, आई एम टी मानेसर, फरीदाबाद में कई फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 1 नवम्बर 2014 से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन की बात की तब कम्पनी अधिकारियों और यूनियन लीडरों ने एक स्वर में कहा कि सरकार से कागज नहीं आया है। कुछ प्रचारकों ने कहा कि हरियाणा में बनी नई सरकार ने नये ग्रेड कैन्सल कर दिये हैं, कुछ अन्य ने नये ग्रेड 1 जनवरी से, तो कुछ ने 1 अप्रैल से लागू होने की बातें की।

हरियाणा सरकार के श्रम विभाग की इन्टरनेट पर साइट पर 14 अगस्त 2014 का गजट छपा है। इस गजट में 1 नवम्बर से नये ग्रेडों का विवरण है और एतराज के लिये दो महीने का समय दिया है। इसलिये 14 अक्टूबर को एतराजों के लिये समय समाप्त हो गया। नये ग्रेडों पर किसी भी अदालत ने रोक नहीं लगाई है। हरियाणा में नई सरकार ने नये ग्रेडों में कोई फेर-बदल नहीं किया है। नये ग्रेड 1 नवम्बर 2014 से लागू समझें।

रही सरकार से कागज आने की बात, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करने का कागज सरकार से आये 80 साल हो गये हैं — 98 प्रतिशत फैक्ट्रियों में आज यह लागू नहीं है — साहबों से, लीडरों से पूछें। स्थाई काम-स्थाई मजदूर के कागज....

मिलेंगे क्या? देंगे क्या?

लेने के लिये कदम उठाना

कम्पनियों द्वारा सार्वजनिक किये जाते बही-खातों की जाँच-पड़ताल का एक परिणाम यह है: फैक्ट्री में काम करती-करता प्रत्येक मजदूर एक महीने में अठारह से बीस लाख रुपये का उत्पादन करता-करती है। और, दिल्ली के इर्द-गिर्द के क्षेत्रों में फैक्ट्री मजदूरों की तनखायें पाँच हजार से पचास हजार रुपये के दायरे में हैं। हम जो उत्पादन करते हैं उसका अठानवे-निन्यानवे प्रतिशत कहाँ जाता है? उसका क्या होता है?

सरकारें न्यूनतम वेतन निर्धारित करती हैं। सरकारों के कानूनों के अनुसार जो तय की है उससे कम तनखा कम्पनियाँ नहीं दे सकती। लेकिन जहाँ देने वाली बात रहती है वहाँ निर्धारित न्यूनतम से कम तनखा देते हैं। और, जहाँ लेने वाली बात रहती है वहाँ हम फैक्ट्री मजदूरों को तीस-चालीस-पचास हजार रुपये तनखा लेते देखते हैं। इसलिये बात निर्धारित न्यूनतम वेतन से अधिक लेने की है। जो है उससे ज्यादा के लिये विचार करते और कदम उठाते समय यह ध्यान में रखना बनता है कि एक फैक्ट्री मजदूर आज एक महीने में बीस लाख रुपये का प्रोडक्शन करती-करता है।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अक्टूबर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक	8632 रुपये मासिक
अर्ध-कुशल श्रमिक	9542 रुपये मासिक
कुशल श्रमिक	10,478 रुपये मासिक
स्नातक और अधिक	11,414 रुपये मासिक

हरियाणा सरकार द्वारा 1 नवम्बर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतनः

अकुशल श्रमिक	7400 रुपये मासिक
अर्ध-कुशल *ब*	8160 रुपये मासिक
कुशल श्रमिक *अ*	8570 रुपये मासिक
उच्च कुशल श्रमिक	9450 रुपये मासिक
हल्का वाहन ड्राइवर	9000 रुपये मासिक
गार्ड बिना शस्त्र	7770 रुपये मासिक
सफाई कर्मचारी	7900 रुपये मासिक
डाटा इन्ट्री ऑपरेटर	8570 रुपये मासिक
स्टाफ: दसवीं से कम	7770 रुपये मासिक

"अस्वीकार-इनकार" के मुखर करंट

1998 के ग्रीष्म-काल में मजदूर लाइब्रेरी में कई दिन लंबी बातचीतें हुई। इन में शामिल थे कई फैक्ट्रियों के 35-50 वर्ष आयु के, कई सालों से परमानेन्ट मजदूर। चर्चाओं में शामिल कुछ साथियों के नाम याद हैं — चिन्तामणि, दूधनाथ, हरिलाल, भूपेन्द्र, सुखबीर सिंह, रामसागर, मदन, प्यारे लाल, हारुण, गुरदीप, अशोक, रामधारी, रमेश, बाबू, नारस, इरशाद, रामचन्द्र, समय सिंह, सुरेन्द्र, राजनारायण, महेन्द्र, मढई, रघुवरदयाल, बासू, नानक, मोहन, राजेश, रामचेत, जानकी, अमर, सुरजीत, ब्रह्मप्रकाश, अकबर, पंचम, सतनाम, प्रीतम, जवाहर, प्रताप, प्रेम सिंह, भूपत, किशन, पातीराम, शीतला, सुभाष, उदय, दयाशंकर, सतबीर, धर्मपाल, बिरखा, सतीश, सुलेमान, रामदुलारे, राजेन्द्र प्रसाद, पीताम्बर, लालाराम, परमानन्द, ब्रह्मदेव, रामफल, शिव कुमार, विजय बहादुर, छोटेलाल, बाबूराम, भजनलाल, अक्लीम, रामतीरथ, राजबली, पुरुषोत्तम।

संवादों ने कार्यस्थलों के अनुभव और समझ से आरम्भ होते हुये एक विस्तृत रूप लिया। अगस्त 1998 के मजदूर समाचार के अंक में इनकी एक रूपरेखा चिन्हित की गई। यहाँ हम उसे फिर प्रकाशित कर रहे हैं। कहा जाता है कि जब भी कोई लड़की तरंग उत्पन्न करती है, उसकी पृष्ठभूमि में माँ से, दादी से, नानी से, मामी से, चाची से, ताई से, बहनों से, सहेलियों से अनेकों आदान-प्रदानों का बल होता है। आज परमानेन्ट वरकरों की काफी आलोचनायें होती हैं। पर एक ऐसा करंट अब भी उनके बीच है, जिस से सब लोग बल और ऊर्जा पाते हैं, पा सकते हैं।

जीवन में हम कई बातें, चीजें, राहें, व्यवहार अस्वीकार करते हैं। हमारे यह इनकार कोई ठहरे हुये, स्थिर प्रकृति के नहीं होते। जिन्हें हम एक समय अमान्य करते हैं उनमें से कुछ को बाद में स्वीकार करते हैं तो कई नये इनकार भी आरम्भ करते हैं। क्या स्वीकार करते हैं और क्या अस्वीकार करते हैं यह हमारे जीवन को गहरे तौर पर प्रभावित करते हैं। किस-किस को मानें तथा किस-किस से इनकार करें पर बार-बार आपस में चर्चायें करना स्वाभाविक तो है ही, अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है। यहाँ कुछ मजदूरों के बीच अस्वीकार-इनकार पर हुई चर्चाओं में उभरे कुछ पाइन्ट विचार-विमर्श तथा समृद्धि के लिये प्रस्तुत हैं।

● ***" किसी वरकर की सुपरवाइजर से, मैनेजर से शिकायत नहीं करना।"***

" किसी मजदूर के खिलाफ मैनेजमेन्ट की तरफ से गवाही नहीं देना।"

यह बहुत सामान्य इनकार हैं। इन आम अस्वीकारों के पीछे अनुभवों से उत्पन्न हुये तथा मजदूरों में व्यापक स्तर पर फैले यह अहसास, यह समझ हैं :

— गलती किस से नहीं होती? आज तुम्हें फँसाया तो कल मेरा नम्बर। अपने बीच विवादों के समाधान के लिये मैनेजमेन्ट को पँच बनाना अपने लिये काँटे बोना है।

— एक-दूसरे के प्रति निजी दुश्मनी का होना, एक-दूसरे पर शक करना मजदूरों के बीच तालमेल में आड़े आते कँटीले तार हैं। बिना आपसी तालमेल के मैनेजमेन्ट का मुकाबला करना बहुत ही मुश्किल है।

— और, मैनेजमेन्ट को मजबूत करना अपने पक्ष को कमजोर करना है।

जगह-जगह और बार-बार के लीडरों व लीडरी के अनुभवों ने इधर व्यापक स्तर पर लीडर-लीडरी को अस्वीकार बना दिया है। यह देख कर कि मैनेजमेन्ट और लीडरी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, आपसी विवादों को लीडरों के पास ले जाने से भी मजदूर बड़े पैमाने पर इनकार करने लगे हैं।

अपने बीच के विवादों को शीघ्र हल करने के लिये आपस में मिल-बैठ कर मामले निपटाना सरल, सस्ता और बिना खतरे का रास्ता है। यह राह चौड़ी होती नजर आ रही है और इसका आधार है अपने बीच गैरबराबरी को अस्वीकार करना। यह सही है कि सब बराबर नहीं हो सकते पर यह भी सही है कि आपस में हमारा व्यवहार "गैरबराबरी नहीं" पर आधारित होता है तो हमारे बीच बढिया तालमेल होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति की साझेदारी होती है। आपसी रिश्तों में "गैरबराबरी नहीं" की बुनियाद हर मजदूर द्वारा खुद कदम उठाने तथा मजदूरों की टोलियों के बीच तालमेल का भी आधार है।

● ***" किसी की बराबरी करना अस्वीकार है। अगर 500 पीस निर्धारित हैं तो उतने ही बनाते हैं, यह नहीं कि वह 600 पीस बना रहा है तो हम भी बनायें।"***

" होड़ वाला काम नहीं करते। मजदूरों की होड़ में अधिक माल निकालना अस्वीकार है।"

" कभी भी वाहवाही के चक्कर में ज्यादा उत्पादन नहीं किया।"

यह भी बहुत सामान्य इनकार हैं। स्कूल, रेडियो, टी वी के द्वारा होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन के जो संस्कार देने के प्रयास होते हैं उनके विपरीत फैक्ट्रियों में होड़ की यह आम अस्वीकृति मजदूरों के अनुभवों पर आधारित है :

— अपने सहकर्मियों के साथ कम्पीटीशन में पड़ने का सीधा नतीजा सब के लिये काम के बोझ का बढना, काम की रफ्तार का बढना होता है।

— ज्यादा काम, तीव्र काम स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

— तीव्रतर काम का एक और अर्थ है ज्यादा संख्या में हाथ-पैर कटना।

— अधिक काम करने का मतलब है कम लोगों की उत्पादन के लिये जरूरत। दरवाजे पर छँटनी की दस्तक।

— ज्यादा व तीव्र काम तन को तो खींचता ही है, मन को सिकोड़ता भी है। मात्र पैसों के लिये खटने के दौरान हँसी-मजाक व बातचीत के लिये वक्त नहीं हो तो पगला जायेंगे।

मजदूरों के बीच होड़ मैनेजमेन्ट की शक्ति में वृद्धि करती है और मजदूरों के लिये नुकसान ही नुकसान लिये है इसीलिये वरकर परस्पर प्रतियोगिता से नफरत करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर परेशानी उठा कर भी इसे रोकते—रोकती हैं।

तभी तो मैनेजमेन्टें होड़ पैदा करने के लिये विद्वानों को रिसर्च में लगाये हैं और मशीन के पुर्जों के विकास की तरह मजदूरों के वास्ते मानव संसाधन विकास (एच. आर. डी.) विभाग खोले हैं। इन्सानों को मशीन के पुर्जे की तरह देखने वाले यह लोग टाइम स्टडी, टी पी एम, टी क्यू एम, बी पी आर, आई ई नोर्मस् की डाइयों में मजदूरों को घिसा-घिसु कर फिट करने की कोशिश करते हैं।

फैक्ट्रियों में क्लासें लगा कर मैनेजमेन्टें विश्व विद्वानों के ज्ञान-विज्ञान की भूल-भुलैया के जरिये जो होड़ पैदा करने में लगी हैं उसे फुस्स करने के लिये होड़ की अस्वीकृति पर मजदूरों में व्यापक चर्चायें आवश्यक हैं।

● ***"आपसी रिश्तों पर पैसों की परछाई तक अस्वीकार है।"***

रुपये-पैसों के प्रति अनमनापन तो व्यापक है ही, आपसी रिश्तों में पैसों को पूरी तरह नकारना युवाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि अधिक व्यापक है। फ्री का फैलाव हो रहा है और रुपये-पैसों की अस्वीकृति तेजी से उभर रही है।........

✶ अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।

✶ महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।